पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित 16.11.2016 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join-http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय: आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष: 9810117464, 9868051444

251 कुण्डीय यज्ञ की तैयारी हेतु विशाल आर्य कार्यकर्ता बैठक
रविवार, 4 दिसम्बर 2016
प्रात: 11.30 बजे
महर्षि दयानन्द भवन,
आसिफ अली रोड, नई दिल्ली
प्रीतिभोज: दोपहर 2 बजे
सभी साथी समय पर पंहुचे
-डा. अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष

वर्ष-33 अंक-12 कार्तिक-2073 दयानन्दाब्द 192 16 नवम्बर से 30 नवम्बर 2016 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.11.2016 E-mail:aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website: www.aryayuvakparishad.com

vk;Z lU;klh Lokeh lfPpnkuUn th dk ^^ve`r egksRlo** lkYykl lEiUu
vk;Z lekt ds izpkj izlkj ds fy, okuizLFkh vk;Z tu lU;kl xzg.k djsa
&Mk-vfuy vk;Z]jk"Vªh; v/;{k]dsUnzh; vk;Z ;qod ifj"kn~

Lokeh lfPpnkuUn th ds 75 osa tUeksRlo ij vfHkuUnu djrs Mk-vfuy vk;Z]Mk-ykt irjk; pk/kjh] /keZiky vk;Z] vkeizdk'k lpnsok] LorU= dqdjstk] 'kkfUr izdk'k vk;Z] lkfo=h vk;kZ o ftyk v/;{k lkjHk vk;Z A

jfookj] 13 uoEcj 2016]dsUnzh; vk;Z ;qod ifj"kn~ gfj;k.kk ds rRoko/kku esa ofnd Kku vkJe]ocZ'kki jksM];eukuxj esa Lokeh lfPpnkuUn th dk ^^ve`r egksRlo** lkYykl euk;k x;k A lekjksg esa gfj;k.kk ds dksus dksus ls vk;Z cU/kq Hkkjh la[;k esa igqaps A lekjksg ds eq[; vfrfFk Mk-vfuy vk;Z us dgk fd ge viuk dk;Z drkvksa fo}kuksa o lU;kfl;ksa dk vfHkuUnu djrs jgsuk pkfg, ftlls u;s ykx izsj.kk ydj lxBu ls tqMsa A egf"kZ n;kuUn ds fe'ku dks vkxs c<kus ds fy, lefiZr dk;ZdrkZvksa dh vko';drk gS ftlds fy;s okuizLFkh vk;Z tuksa dks lU;kl dh nh{kk ydj vk;Z lekt ds dk;Z dks vkxs c<kus dk ldYi yuk pkfg;s A vkt ge viuk edku]QDVªh dks mrjkf/kdkjh rks rS;kj dj jgs gSa ysfdu egf"kZ n;kuUn dh fopkj/kkjk dks c<kus ds fy, dkbZ mrjkf/kdkjh rS;kj ugha dj jgs ;g fpUrk dk iz'u gS A mUgksus leLr vk;Z txr dh vksj o lkoZnsf'kd lHkk ds iz/kku Lokeh vk;Z o'k th dh vksj ls 'kqHkdkeuk;sa iznku dh A vk;Z dsUnzh; lHkk djuky ds lg{kd Mk-ykt irjk; pk/kjh us dgk fd Lokeh th ds lkFk vudks laLej.k tqMs gS, gS bUgksus ijk thou on vkj lekt ds izpkj izlkj ds fy, lefiZr dj fn;k okLro esa ;g blds ;kX; gS A fnYyh ls cgu Lo.kk vk;kZ dh Hkxtu e.Myh us lqUnj Hktuks ls lcdk eu eksg fy;k A lekjksg dk d'ky lapkyu ftyk v/;{k lkjHk vk;Z us fd;k o ftyk egkea=h jkds'k xksoj us lHkh dk vkHkkj O;Dr fd;k A ikUrh; v/;{k LorU= dqdjstk us dgk fd Lokeh th dk ;qodksa ds izfr vikj Lusg jgk gS vusdks f'kfoj Lokeh th us yxk;s gS gekjk Hkh drO; curk gS fd ge mudk vfHkuUnu djsa A

izeq[k :Ik ls gfjpUn Lugh ¼lkuhir½] lkfo=h vk;kZ] vk-ih-lpnsok ¼djuky½]bZ'k vk;Z ¼fglkj½] jkeegj 'kkL=h ¼dq:{ks=½] i"ik p?k] vkeizdk'k oekZ ¼xUukSj½] fot; lj hu ¼yf/k;kuk½] pUnekgu ¼p.Mhx<½] lrh'k cly] ekfgr vk;Z] bLyke xqtj ¼;euk uxj½] ;'k vk;Z] jkedqekj flg] /keZiky vk;Z] v:.k vk;Z] jkfgr vk;Z] gjhUnz pk/kjh vkfn ldMks vk;Z tuks dh 'kkunkj mifLFkfr ds lkFk dk;Zde lkYykl lEiUu gvk A lqUnj izhfrHkkt o ekyiqM][khj dk vkuUn ydj lHkh mRlkg iw.kZ okrkoj.k esa fonk gq, A

ifj"kn~ ds jk"Vªh; v/;{k Mk-vfuy vk;Z ds tUeksRlo ij lxhr lU/;k lkYykl lEiUu

lekjksg ds eq[; vfrfFk iwoZ'k Hkktik v/;{k Jh lrh'k mik/;k; dk 'kky o Lefr fpUg ls vfHkuUnu djrs Mk-vfuy vk;Z]fnus'k vk;Z]fiz-';keyky vk;Z]fot; efyd]vkpk;Z xoUn 'kkL=h]jfono xqIrk]prjflg ukxj]izdk'kohj 'kkL=h A f}rh; fp= esa&Mk-vfuy vk;Z o iRuh vk;kZ dk vfHkuUnu djrs nf{k.k fnYyh on izpkj e.My ds iz/kku jfono xqIrk]egkeU=h prjflg ukxj]ujUnz vk;Z ^^lqeu**]egkohjflg vk;Z o lqjUnz 'kkL=h A

lkseokj] 14 uoEcj 2016]dsUnzh; vk;Z ;qod ifj"kn~ ds jk"Vªh; v/;{k Mk-vfuy vk;Z ds 58 osa tUeksRlo ij fnYyh gkV]lja tuh uxj]ubZ fnYyh esa lxhr l/;k ^^,d 'kke 'kghnks ds uke** dk Hk0; vk;kstu fd;k x;k A Jh ujUnz vk;Z ^^lqeu** o vfdr mik/;k; ds e/kj xhrks ij ykx >e x;s A fnYyh iwoZ'k Hkktik v/;{k lrh'k mik/;k; us n's ds uo fuek.k esa vk;Z lekt dh Hkfedk dh ppkZ djrs gq, jk"Vª fuek.k esa iqu% egRoi.kZ Hkfedk fuHkkus dks vk;Z tuks ls vkgoku fd;k A iwoZ fo/kk;u lHkk v/;{k Mk- ;kxkuUn 'kkL=h]nf{k.k fnYyh on izpkj e.My ds iz/kku jfono xqIrk]egkeU=h prjflg ukxj]jkts'k egUnhjrk]lqjUnz 'kkL=h]Lo.kZ xEHkhj]fot; efyd]egkohjflg vk;Z]l'khy ek;Z]fo|klkxj xqIrk]/keZohj iokj]gfjpUn vk;Z]fot; xqIr]nonr vk;Z]d-,y-jk.kk]vkeizdk'k luh]jktUnz flg]vkeizdk'k Mx]vfuy gk.Mk]HkkjrUnz ek lq]Mk-ujUnz VVstk]fiz-vUtq egjks=k]izdk'kohj 'kkL=h]vke lijk¼iz/kku]mrjh fnYyh on izpkj e.My½]lqjUnz lpnsok]ljyk ukxiky]yo iljhpk]dey vk;Z]food vfXugks=h]vkpk;Z xoUn 'kkL=h vkfn x.kekU; vk;Z tu mifLFkr Fks A ifj"kn~ ds dk;ZdrkZ v:.k vk;Z]f'koe feJk]jkds'k vk;Z]o:.k vk;Z]vdqj vk;Z]lqn's'k Hkxr egkeU=h egUnz HkkbZ ds urRo esa 0;oLFkk lEHkky jgs Fks

एक हजार वर्ष पूर्व भारत के हिन्दुओं की जीवन शैली

लेखक : कृष्ण चन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा, दूरभाष : 0172–4010679

यह लेख अल–बिरूनी की पुस्तक 'भारत' के आधार पर लिखा गया है। अल–बिरूनी ईरानी मूल का मुसलमान था। उसका जन्म सन 973 में हुआ था। वह भारत में कई वर्ष तक रहा था। उसने उस समय के भारत के सम्बन्ध में इस पुस्तक में विस्तार से लिखा है।

मूर्तिपूजा – भारत में निम्न वर्ग के अशिक्षित लोगों जिनको अधिक समझ नहीं है के लिए ही मूर्तियां स्थापित की जाती थीं। दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र का अध्ययन करने वाले विद्वान लोग तो अमूर्त ईश्वर की ही उपासना करते हैं। ईश्वर को दर्शाने के लिए बनाई गई मूर्तियों की अराधना तो वे स्वप्न में भी नहीं कर सकते।

वेद – ब्राह्मण वेद का पाठ बिना उसे समझे करते हैं। वैसा ही वे कण्ठस्थ भी कर लेते हैं और वही एक से सुनकर दूसरा याद कर लेता है। उनमें से थोड़े ही ऐसे हैं जो उसकी टीका भी पढ़ते हैं और वे तो गिने चुने ही होंगे जिन्हें वेद की विषयवस्तु और उसके भाष्य पर ऐसा अधिकार हो कि वे उस पर कोई शास्त्रार्थ कर सकें।

ब्राह्मण क्षत्रियों को वेद की शिक्षा देते हैं। क्षत्रिय उसका अध्ययन तो कर सकते हैं, लेकिन उन्हें उसकी शिक्षा देने का अधिकार नहीं। वैश्यों और शूद्रों को तो वेद को सुनने की भी मनाही है, उसके उच्चारण और पाठ की तो बात दूर है। यदि उनमें से किसी के बारे मे यह साबित हो जाए कि उसने वेद–पाठ किया है तो ब्राह्मण उसे दण्डनायक के सामने पेश कर देते और दण्डस्वरूप उसकी जीभ कटवा दी जाती।

जातपात – क्षत्रिय प्रजा का शासन करता है और उसकी रक्षा करता है। वैश्य का काम खेती करना, पशुपालन है। शूद्र ब्राह्मण के सेवक जैसा होता है जो उसके काम की देखभाल और उसकी सेवा करता है।

प्रत्येक मनुष्य जो कोई ऐसा व्यवसाय करने लगता है जो उसकी जाति के लिए वर्जित है, जैसे ब्राह्मण का व्यापार करना, शूद्र का खेती करना तो वह ऐसे पाप या अपराध का दोषी माना जाता है जिसे वे चोरी जैसा ही समझते हैं।

यदि कोई ब्राह्मण किसी शूद्र के घर कई दिन तक भोजन कर ले तो उसे जाति से निकाल दिया जाता है और उसे फिर से जाति में शामिल नहीं किया जाता।

जब मुस्लिम देशों से हिन्दू दास भागकर अपने देश और धर्म में वापिस आते हैं तो उन्हें स्वीकार नहीं किया जाता।

जो लोग हिन्दू नहीं हैं और मनुष्यों का वध करते हैं, पशुओं की हत्या करते हैं और गोमांस खाते हैं मलेच्छ अर्थात अपवित्र कहे जाते हैं।

पुस्तक लिखना – हिन्दुओं के यहां उनके दक्षिण प्रदेश में एक पतला–सा पेड़ खजूर और नारियल जैसा होता है जिसमें फल लगता है जो खाया जाता है। उसके पत्ते एक गज लम्बे और तीन अंगुल चौड़े होते हैं। वे उसे ताड़ कहते हैं और उन पर लिखते हैं। वे इन पत्तों को एकत्र करके इनको बांध कर पुस्तक बना लेते हैं और बीच में सुराख करके उसे डोरी से सी देते हैं। इस प्रकार की पुस्तक को पोथी कहते हैं।

हिन्दू अपने ग्रन्थों का प्रारम्भ 'ओऽम्' शब्द से करते हैं। 'ओऽम्' शब्द की आकृति ¬ होती है।

सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण – हिन्दू खगोल शास्त्रियों को यह बात भली प्रकार ज्ञात है कि पृथ्वी की छाया से चन्द्रग्रहण और चन्द्रमा की छाया से सूर्यग्रहण होता है। लेकिन जनसाधारण हमेशा बड़े जोर–जोर से यह उद्घोष करते हैं कि राहु का सिर ग्रहण का कारण है।

धन, कर तथा ब्याज – खेती, पशु, व्यापार आदि से हुई कमाई में से सबसे पहले राजा को कर देते हैं, कुछ अपने आम खर्चों के लिए अलग रख लेते हैं, कुछ धन विद्वानों और अतिथियों की सेवा के लिए तथा शुभ कार्यों के लिए तथा कुछ भविष्य के लिए आरक्षित रख लेते हैं।
केवल ब्राह्मण सभी करों से मुक्त हैं।
ब्याज लेने की अनुमति केवल शूद्र को है, औरों के लिए मनाही है।

खानपान – मूलतः हिन्दुओं के लिए सभी प्रकार का वध वर्जित है और सभी प्रकार के अण्डे तथा मदिरा की भी मनाही है। शूद्र के लिए मदिरा की अनुमति है।

कुछ लोग भोजन के पश्चात पान खाते हैं। पान के पत्ते की गर्मी शरीर की उष्मा को बढ़ाती है, पान में लगा चूना हर नम या गीली वस्तु को सुखा देता है और सुपारी दान्तों, मसूड़ों और पेट को मजबूत करती है।
गाय एक ऐसा पशु है जो मनुष्य के कई काम आता है – यात्रा के समय भार ढोना, जुताई–बुआई में काम आना, घर–गृहस्थी में दूध तथा उससे बनी वस्तुएं देना। इसके इलावा मनुष्य इसके गोबर का इस्तेमाल करता है। सर्दी के मौसम में उसकी सांस तक काम आती है।

फलित–ज्योतिष – हिन्दू सात ग्रह मानते हैं। उनमें बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा को सर्वथा शुभ मानते हैं। शनि, मंगल और सूर्य को सर्वथा अशुभ मानते हैं। ग्रहों में राहु को भी शामिल कर लिया है जो वास्तव में ग्रह नहीं है। वे जन्मपत्री, फलित–ज्योतिष आदि को मानते हैं।

विवाह – हिन्दुओं में बहुत ही छोटी आयु में विवाह हो जाता है। इसलिए माता–पिता ही अपने पुत्र–पुत्रियों के विवाह की व्यवस्था करते हैं। विवाह के समय खुशियां मनाने के लिए गाजे–बाजे लाए जाते हैं। पति और पत्नी का विछोह मृत्यु होने पर ही हो सकता है क्योंकि उनके यहां विवाह–विच्छेद (तलाक) की कोई परम्परा नहीं है। लड़का–लड़की का एक ही गोत्र में विवाह नहीं होता। इनकी कम से कम पाँच पीढ़ी में भी विवाह नहीं होता।

विधवा – यदि किसी स्त्री का पति मर जाए तो वह दूसरे पुरुष से शादी नहीं कर सकती। उसे दो में से एक विकल्प प्राप्त है – चाहे तो आजीवन विधवा रहे या सती हो जाए। सती होना श्रेयस्कर माना जाता है क्योंकि विधवा जब तक जीवित रहती है उसके साथ दुर्व्यवहार होता रहता है। जहां तक राजाओं की पत्नियों का सम्बन्ध है वे तो सती हो जाने की ही अभ्यस्त हैं, चाहे वे ऐसा चाहती हों या नहीं। इस सन्दर्भ में केवल उन स्त्रियों को अपवाद रूप में छोड़ देते हैं जो वयोवृद्ध हों और जिनकी सन्तान हो। इसका कारण यह है कि पुत्र अपनी माता के संरक्षण के लिए उत्तरदायी होता है।

विविध – हिन्दू पाजामा नहीं पहनते, उसके स्थान पर धोती पहनते हैं जो इतनी लम्बी होती है कि उनके पैर तक ढक जाते हैं। वे एक दूसरे का जूठा नहीं खाते। जिन बर्तनों में वे खाते हैं यदि मिट्टी के होते हैं तो खाने के बाद उन्हें फेंक देते हैं। पुरुष कानों में छल्ले, बाहों में कड़े, अनामिका और पैरों के अंगूठों में स्वर्ण मुद्रिकाएं पहनते हैं। वे अपनी कमर की दाहिनी ओर कुठार बांधते हैं। वे यज्ञोपवीत पहनते हैं जो बाएं कन्धे से कमर की दाहिनी ओर तक जाता है। सभी प्रकार के कार्य–कलाप और आपातकाल में वे स्त्रियों से सलाह लेते हैं। मृत व्यक्ति का ऋृण उसके वारिस को चुकाना पड़ता है चाहे मृत व्यक्ति ने कोई सम्पत्ति छोड़ी हो या नहीं। मृत व्यक्ति के प्रति वारिस के लिए कई भोज भी कर्त्तव्य हैं। हिन्दू अपने शवों का दाह संस्कार करते हैं। परन्तु तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों के शव जलाए नहीं जाते।

हिन्दुओं के त्योहार – वर्ष भर में हिन्दू बसन्त, भाद्रपद तृतीया, भाद्रपद अष्टमी, दीवाली, फाल्गुण पूर्णिमा, शिवरात्री आदि लगभग बीस त्योहार मनाते हैं। अधिकतर त्योहार स्त्रियां और बच्चे ही मनाते हैं। उन्हें मनाने का तरीका आज से बहुत भिन्न था। आज का दशहरा, दीवाली की आतिशबाजी, होली के रंग नहीं थे। दीवाली पर श्री राम की अयोध्या वापसी, भाद्रपद अष्टमी पर श्री कृष्ण का जन्म नहीं जुड़े थे।

वास्तव में श्री राम का अयोध्या वापसी का समय कार्तिक मास की अमावस्या नहीं था, वह समय चैत्र मास का था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्री राम के राज्याभिषेक की तैयारी चैत्र मास में हो रही थी, तभी उन्हें वनवास मिला। अतः वापसी भी चैत्र मास में ही होनी चाहिए क्योंकि वनवास के चौदह वर्ष तभी पूरे हो जाते हैं।

भाद्रपद अष्टमी को हिन्दू एक पर्व मनाते हैं जो 'ध्रुव गृह' कहलाता है। वे स्नान करते हैं और पौष्टिक अन्न खाते हैं ताकि उनकी स्वस्थ सन्तान पैदा हो। कार्तिक अमावस्या के दिन दीवाली मनाई जाती है। इस दिन लोग स्नान करते हैं। बढ़िया कपड़े पहनते हैं, एक दूसरे को पान सुपारी भेंट करते हैं और एक दूसरे के साथ दोपहर तक हर्षोल्लास के साथ खेलते हैं। रात्रि को वे हर स्थान पर अनेक दीप जलाते हैं ताकि वातावरण सर्वथा स्वच्छ हो जाए। इस पर्व का कारण यह है कि वासुदेव की पत्नी लक्ष्मी विरोचन के पुत्र बलि को जो सातवें लोक में बन्दी है – वर्ष में एक बार इसी दिन बन्धन–मुक्त करती है और उसे संसार में विचरण करने की आज्ञा देती है। इसी कारण यह पर्व 'बलिराज्य' कहलाता है। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन स्त्रियों का पर्व है जो 'ओडस' या 'ढोला' अर्थात 'डोला' कहलाता है। इस दिन वे किसी विशेष स्थान पर आग जलाती हैं। फिर उस आग को गांव के बाहर फेंक देती हैं।

चण्डीगढ़ में नये गुरूकुल का शुभारम्भ

आर्य समाज,सैक्टर–22–ए,चण्डीगढ़ में 11 अक्तुबर 2016 से नये आर्ष गुरूकुल का शुभारम्भ किया गया है । स्वामी प्रणवानन्द जी के निर्देशन व डा.शिव कुमार शास्त्री के आचार्यत्व में गुरूकुल चलेगा। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भी पंहुच कर अपना आशीर्वाद प्रदान किया। आर्य समाज की पूरी टीम व प्रधान श्री सोमदत शास्त्री जी को हार्दिक बधाई व शुभकामनायें ।

दिल्ली से बाहर के आर्य जन ध्यान दें

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 27,28,29 जनवरी 2017 में दिल्ली से बाहर के आने वाले आर्य बन्धुओं व आर्य युवकों से अनुरोध है कि कृपया अपने पधारने की सूचना,दिनांक व संख्या से शीघ्र सूचित करें जिससे यथोचित आवास आदि की व्यवस्था की जा सके । सम्पर्क नं. श्री देवेन्द्र भगत–9312406810, श्री धर्मपाल आर्य–9871581398, श्री प्रवीन आर्य–9911404423, श्री यशोवीर आर्य–9312223472, श्री रामकुमार सिंह–9868064422, श्री महेन्द्र भाई–9013137070, श्री यज्ञवीर चौहान–9810493055 ओर 26 से 29 जनवरी 2017 तक सेवा शिविर में सेवा देने के इच्छुक आर्य युवक अपना नाम प्रधान शिक्षक Jh lkjHk xIrk&9971467978 ;k 0;oLFkkid Jh v:.k vk;;&9818530543 dk fy[kok no A

27 नवम्बर को डा. अनिल आर्य बागपत में

प्रो.सुरेन्द्रपाल आर्य की हीरक जयन्ती व श्रीमती सत्यवती आर्या के विवाह की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में रविवार, 27 नवम्बर 2016 को प्रातः 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक स्थान–ग्राम मवी कलां,ब्लाक–बिनौली,बागपत,उ.प्र. में ''राष्ट्रीय प्रेरणा पर्व'' का भव्य आयोजन किया जा रहा है । समारोह में सभी आर्य जन सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं । सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी व परिशद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य भी समारोह में सम्मलित होंगे

–महावीरसिंह आर्य,सम्पर्कः 9313147244

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 38 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी व स्वामी धर्ममुनि जी के सान्निध्य में
आर्य नेता, शिक्षाविद् डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता में
वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज के ब्रह्मत्त्व में
वायु प्रदूषण व पर्यावरण की शुद्धि के लिए

251 कुण्डीय विराट् विश्व शांति यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 27, 28, 29 जनवरी 2017 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान : उत्सव ग्राउण्ड, कड़कड़डूमा, पूर्वी दिल्ली- 110092

मुख्य यज्ञमान : सर्व श्री दर्शन अग्निहोत्री, सुरेन्द्र गम्भीर, रामलुभाया महाजन, चौ. लाजपतराय आर्य

राष्ट्रीय एकता तिरंगा यात्रा : शुक्रवार 27 जनवरी 2017, प्रातः 10:30 बजे
उत्सव ग्राउण्ड से प्रारम्भ होकर इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन आदि विभिन्न कॉलोनियों में
होते हुए वापिस दोपहर 1 बजे उत्सव ग्राउण्ड में समाप्त होगी

मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन
- वेद सम्मेलन
- शिक्षा-संस्कृति सुधार सम्मेलन
- भव्य संगीत संध्या
- आर्य महिला सम्मेलन
- राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था रहेगी

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 8 जनवरी 2017 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्क: श्री वेदप्रकाश आर्य - 9810487559, संजय आर्य - 9311840110
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 8 जनवरी 2017 तक यज्ञवीर चौहान - 9810493055, राजीव कोहली- 9968266014, विकास शास्त्री - 8010204256, अरूण आर्य- 9818530543, विकास शर्मा - 9818161291 पर आरक्षित करवा लें।

हजारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बने

निवेदक

आनन्द चौहान
डॉ. रिखबचन्द जैन
मायाप्रकाश त्यागी
विजयारानी शर्मा
सुरेन्द्र कोहली

डॉ. अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	यशोवीर आर्य	रामकुमारसिंह आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक समारोह	प्रबंधक समारोह
9810117464	9013137070	9871581398	9312223472	9868064422
9868002130	011-22328595			

विश्वनाथ आर्य, कृष्णचन्द पाहुजा, सुभाष बब्बर, रामकृष्ण शास्त्री
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

दुर्गेश आर्य, देवेन्द्र भगत, राकेश भटनागर, ओम सपरा
राष्ट्रीय मंत्री

आनन्दप्रकाश आर्य, सत्यभूषण आर्य, स्वतंत्र कुकरेजा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

प्रवीन आर्य, सुरेश आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, सुशील आर्य
राष्ट्रीय मंत्री

विकास गोगिया, सौरभ गुप्ता
9999119790, 9971467978
संयोजक- जन सम्पर्क

स्वागत समिति : चन्द्रप्रभा अरोड़ा, जवाहर भाटिया, गायत्री मीना, कै. अशोक गुलाटी, अमीर चन्द रखेजा, विनोद खुल्लर, राजकुमारी शर्मा, महेश भार्गव, वीरेन्द्र जरयाल, जगदीश पाहुजा, राजेन्द्र खारी, संतोष शास्त्री, ओमप्रकाश पाण्डे, विजय आर्य, सुभाष ढींगरा, पियुष शर्मा, अमरनाथ गोगिया, लक्ष्मी सिन्हा, उर्मिला आर्य, ओमवीर सिंह

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9868661680, 9312406810
E-mail : aryayouthn@gmail.com Website : www.aryayuvakparishad.com
Group : aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http://www.facebook.com/group/aryayouth

आर्य समाज टैगोर गार्डन विस्तार व बैंक एनक्लेव का उत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार 6 नवम्बर 2016, आर्य समाज टैगोर गार्डन नई दिल्ली के उत्सव पर डॉ. विनोद खेत्रपाल को सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य, समाज के प्रधान श्री अशोक आर्य, कविता आर्य व पं. सुरेश झा व द्वितीय चित्र में आर्य समाज बैंक एनक्लेव पूर्वी दिल्ली के वार्षिक उत्सव पर विजेता बालिकाओं को सम्मानित करते हुए समाज के प्रधान श्री जगदीश पाहूजा व मंत्री राजेन्द्र मल्होत्रा व परिषद् अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य

डा. अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर दिल्ली हाट आई.एन.ए. में लगा आर्यो का मेला

lkeokj] 14 uoEcj 2016 dks dUnh; vk;Z ;qod ifj"kn ds v/;{k Mk- vfuy vk;Z ds tUekRlo ij fnYyh gkV ljkstuh uxj] ubZ fnYyh esa mRlkgh vk;Z tu jk"Vªh; v/;{k ds lkFk iz lUu eqnzk esaA

श्री जयभगवान गोयल व डा. योगानन्द शास्त्री भी पंहुचे शुभकामनायें देने

Mk-vfuy vk;Z dks 'kky ls vfHkuUnu djrs jk"Vªoknh f'ko lsuk iez[k Jh t;Hkxoku xks;y o f}rh; fp= esa iwoZ fo/kku lHkk v/;{k Mk-;ksxkuUn 'kkL=h ds lkFk Mk-vfuy vk;Z]vkse lijk]fot; lijk]iohu vk;k]lqjs'k vk;Z]Mk-vfuy JhokLro A

परिषद् की आर्य युवा टीम व माता कृष्णा रहेजा स्मृति दिवस सम्पन्न

fnYyh gkV vkbZ-,u-,-esa vk;Z ;qok Vhe iz lUu eqnzk esa o f}rh; fp=& 'kqdzokj] 4 uoEcj 2016] vk;Z u=h ekrk d".kk jgstk dk 9 ok Lefr fnol vk;Z lekt]lSfud QkeZ l]ubZ fnYyh esa lkYykl euk;k x;k A okfnd fo}ku vkpk;Z vf[kys'oj th us ;K djok;k o vkfdr mik/;k; ds e/kj Hktu gq, A Lokeh fot ;os'k us vk'khokZn inku fd;k A fp= esa lqifl} i=dkj Mk-onizrki okfnd dk lEekfur djrs Jh uohu jgstk]Jh fcjs'k jgstk o Mk-vfuy vk;Z A

प्रताप नगर में ऋषि बलिदान दिवस व अमर कालोनी का उत्सव सम्पन्न

'kfuokj] 5 uoEcj 2016]mrjh fnYyh okn iqpkj e.My ds rRoko/kku esa 133 oka egf"kZ n;kuUn cfynku fnol vk;Z lekt]izrki uxj]fnYyh esa lkYykl euk;k x;k A lekjksg dh v/;{krk lkoZnsf'kd lHkk ds mii/kku Mk-vfuy vk;Z us dh o fo/kk;d Jh lkenr eq[; vfrfFk jgs A e.My ds e=h Jh doy d".k lBh us lekjksg dk dq'ky lapkyu fd;k A fp= esa&fo/kk;d Jh lkenr dk lEekfur djrs Mk-vfuy vk;Z]doy d".k lBh]e.My ds iz/kku vkse lijk]vfer lBh]iwoZ egkikSj Mk-egs'k 'kekZ vkfn A f}rh; fp= esa&jfookj] 13 uoEcj 2016 dks vk;Z lekt]vej dkyksuh]ubZ fnYyh dk okf"kZdkRlo lkYykl lEiUu gqvk A vkpk;Z lrh'k lR;e ds e/kj Hktu gq, A iz/kku Jh ftrsUnz Mkoj lEckf/kr djrs gq, o eap ij&ujsUnz ukxj]lqjsUnz 'kkL=h]jkts'k egsUnhjrk]egsUnz Hkkbz o fir-vpZuk iz"djuk A

शोक समाचार

१. श्री जयपाल आर्य (आर्य समाज,दुर्गापुरी,दिल्ली) का निधन। २. श्रीमती राजकुमारी (आर्य समाज,हापुड़) का निधन ।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स,** 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष: 41548503 मो. 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक:** दिनेश आर्य मोबाईल: 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल: 9958889970